RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-07
July-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i07.017

पर्यावरणीय चेतना और जागरुकता के प्रसार में बाल पत्रिकाओं की भूमिका

[1]डॉ. मनीषा शर्मा [2]श्रीमती वंदना बघेल

[1]शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय, विश्वविद्यालय, अमरकंटक (म.प्र.)
[2]शोधार्थी, हिन्दी साहित्य, 3157/ई सेक्टर, सुदामानगर, इन्दौर (म.प्र.)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 July 2020

Keywords
पर्यावरण, चेतना, बाल पत्रिकाएँ।

***Corresponding Author**
Email: manishasharma86076[at]gmail.com

ABSTRACT

वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण की समस्या चुनौती बनकर उभरी है। प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन, नवीनीकरण, औद्योगिकरण, जंगलों का तेजी से खत्म होना और विकास के नाम पर हरे–भरे जंगलों के स्थान पर कांक्रीट की इमारतें ये सब मनुष्य की भौतिकवादी और भोगवादी प्रकृति का परिणाम है जिसका खामियाजा कई बार विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं और त्रासदी के रूप में सामने आता है। भारत की परंपरा सदैव प्रकृति पूजक रही है। हमनें विभिन्न परंपराओं एवं संस्कारों के रूप में मनुष्य और प्रकृति के बीच सदैव सामंजस्य का भाव रखा परन्तु वर्तमान में युवा पीढ़ी इन सबसे विमुख हो गई है। यदि हमें इस पीढ़ी को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार बनाना है तो बचपन से हमें उनके हृदय में पर्यावरण बोध उत्पन्न करना आवश्यक है। बाल्यावस्था से ही बच्चों में संस्कार के रूप में पर्यावरण के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने में बाल साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कर सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी की बाल पत्रिकाएँ किस प्रकार पर्यावरणीय चेतना के प्रति बच्चों को जागरुक कर रही हैं, विषय पर अध्ययन केन्द्रित है। जिसमें विभिन्न बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित पर्यावरणीय चेतना से संबंधित सामग्री के अध्ययन द्वारा विषय का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़–पौधें, जीव–जंतु, मानव और उसकी सभी गतिविधियों के परिणाम आदि सभी का समावेश होता है। पर्यावरण हमारे चारों ओर व्याप्त है। पर्यावरण समय की शुरुआत से ही मनुष्य की सेवा कर रहा है। हमारे जीवन की प्रत्येक घटना पर्यावरण के भीतर ही संपादित होती है तथा हमारी समस्त क्रियाओं से पर्यावरण भी प्रभावित होता है। पिछले कुछ दशकों से प्रकृति मानव जाति के हाथों पीड़ित है। मनुष्य ने अपनी सुख सुविधाओं के लिए पर्यावरण में जिस प्रकार हलचल मचाई है उसी का परिणाम है कि प्राकृतिक संसाधनों की साम्यावस्था बिगड़ी हुई है तथा सामान्य जनजीवन भी प्रभावित होता नज़र आ रहा है।

आज सारा विश्व पर्यावरण के निम्नीकरण को लेकर चिंतित है। आज मानवीय क्रियाओं के परिणाम और प्रकृति के प्रति आदर भाव में कमी आने से पर्यावरण के प्रति गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है। विज्ञान के क्षेत्र में असीमित प्रगति तथा नये अविष्कारों की प्रतिस्पर्धा के कारण आज का मानव प्रकृति पर पूर्णतया विजय प्राप्त करना चाहता है जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। प्रदूषण के कारण सारी पृथ्वी दूषित हो रही है और भविष्य में मानव सभ्यता का अंत होता दिखाई दे रहा है। जाने–अनजाने ही अपने जीवन स्तर को बढ़ाने के नाम पर हम इसे और अधिक बाधित करने के रास्ते पर आ खड़े हुए हैं।

हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने हाल ही में देश को स्वर्णिम भारत बनाने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें उन्होंने 2017–2022 तक नए भारत के निर्माण का संकल्प लिया जिसमें देश को स्वच्छ, समृद्ध, सशक्त व वैभवशाली बनाने की ओर कदम बढ़ाए है। इस प्रकार देश के प्रत्येक नागरिक का दायित्व है कि इस संकल्प को पूर्ण करने में अपना योगदान दें। इस संकल्प को पूर्ण करने के लिए देश की बड़ी–बड़ी मूलभूत समस्याओं पर विचार करना अत्यंत आवश्यक है। इन कदमों में पहला कदम जनसंख्या नियंत्रण, दूसरा कदम संसाधनों की बर्बादी और तीसरी सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण संरक्षण की है। जिस पर देश का भविष्य निर्भर करता है।

इसी प्रकार सन् 1972 में पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्या पर विचार करने के लिए स्कॉटहोम (स्वीडन) में पहला पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किया जिसमें विश्व के 119 देशों ने भाग लेकर पर्यावरण के प्रति जागरुकता लाने का दृढ़ निश्चय किया साथ ही 5 जून को प्रतिवर्ष विश्व पर्यावरण दिवस मनाने का निश्चय किया जिससे विश्व का प्रत्येक नागरिक पर्यावरण प्रदूषण जैसी भीषण समस्या से अवगत होकर उसके प्रति जागरुकता ला सके।

भोपाल गैस त्रासदी ने पर्यावरण संरक्षण अधिनियम को जन्म दिया और 19 नवम्बर 1986 से पर्यावरण संरक्षण अधिनियम लागू किया गया। जिसमें प्रदूषण रोकने के लिए अधिनियम, उल्लंघन करने वाले को दण्ड, पर्यावरण संरक्षण व सुधार हेतु उपाय व शक्तियों का उल्लेख किया गया। इस संरक्षण नियम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण व सुधार करना है तथा घटित होने वाली घटनाओं, खतरों व पारिस्थितिकी को हानि पहुँचाने वाले कारणों को जानकर उन्हें रोकने का कार्य करना है।

पर्यावरण संसाधनों का दोहन, जलवायु परिवर्तन, ओजोन परत का क्षरण, जंगलों का खत्म होना, नगरीकरण, औद्योगिकरण, भूगर्भ से खनिज निकालना, वृक्षों को काटकर सड़के बनाना ये सभी आधुनिकता की ओर मनुष्य को अग्रसर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

करते हैं किन्तु इसके कारण जो दुर्गति होगी वह भी मनुष्य को ही भोगनी होगी। उत्तराखण्ड की त्रासदी इसका जीवंत उदाहरण है।

पर्यावरण संरक्षण की समस्या चुनौती बनकर उभरी है जिसके प्रति जागरुक होना अत्यंत आवश्यक है। चाहे मनुष्य हो या जीव जंतु हो सभी पर्यावरण की उपज है और पर्यावरण के अभाव में किसी का भी जीना संभव नहीं है। प्रकृति का पर्यावरण से घनिष्ठ संबंध है। आज हमें पर्यावरण को जानने–पहचानने की अत्यंत आवश्यकता है क्योंकि पर्यावरण ही हमारे जीवन को सफल व सुखदायी बना सकता है। बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों में पर्यावरण के प्रति चेतना जगाना अत्यंत आवश्यक है। ताकि बच्चा जन्म से ही पर्यावरण के गुणों से परिचित होते हुए उसके महत्व को समझे।

बच्चे राष्ट्र की आत्मा है क्योंकि इन्हीं से भविष्य में राष्ट्र पल्लवित होगा। जिस देश का जैसा सामाजिक परिवेश होता है उस देश के बच्चे वैसे ही आचरण करने लगते हैं। समाज ही बच्चों को एक सुसंस्कृत इंसान बनाता है। बच्चों के सर्वांगीण विकास में इसीलिए साहित्य की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बाल्यावस्था से ही बच्चों में संस्कार तथा पर्यावरण के प्रति जागरुकता के बीज परिवार, समाज तथा साहित्य के द्वारा ही रोपित किए जाने चाहिए।

आज के आधुनिक परिवेश में बच्चों के साथ युवा वर्ग को भी जागरुक होने की आवश्यकता है। आधुनिक समय में विद्यार्थी या बालक जिस प्रकार की शिक्षा अपने गुरुओं के माध्यम से जिस माहौल में पा रहा है, वह आधुनिक कलेवर को ध्यान में रखकर दी जा रही है। लेकिन इस भौतिक जीवन शैली में आज का मनुष्य इतना आदी हो गया है कि इस अतुलनीय उतार–चढ़ाव के साथ–साथ संस्कारों व मानव मूल्यों का ह्रास हुआ है। पृथ्वी के साथ–साथ अन्य उपग्रहों की जानकाकरी, आसमान को छू लेने और चाँद सितारों की दुनिया को जानने की इस दौड़ में मनुष्य धरती के जीवन के अनुशासन भूल चुका है। केवल एक दूसरे के साथ प्रतिद्वन्द्वी बनकर रह गया है।

डॉ. परशुराम शुक्ल ने अपनी कविता के माध्यम से पर्यावरण क्या है? बताने का प्रयास किया है –

''पर्यावरण किसे कहते है?
आओ हम सब इसको जाने।
पर्यावरण प्रदूषण के माध्यम से,
खतरों को पहले पहचानें।
जो है चारो तरफ हमारे,
पर्यावरण उसे कहते हैं।
ध्वनि, मिट्टी, जल, वायु आदि सब,
इसके अंतर्गत रहते हैं।''[1]

'आक्सफोर्ड' शब्दकोश ने पर्यावरण के स्वरूप को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''वह प्राकृतिक संसार जो भूमि, वायु और जमीन के बीच अंतर्संबंधों के साथ–साथ अन्य जीवों, पौधों, सूक्ष्म जीवों और सम्पदाओं के बीच अंतर्संबंधों को सम्मिलित किए रहता है।''[2] पर्यावरण कहलाता है।

यदि बच्चों को आज की पर्यावरण संरक्षण की चुनौतियों से भलीभांति अवगत कराया जाए। उन्हें पर्यावरण प्रदूषण होने के कारण व निराकरण के उपायों के बारे में जानकारी दी जाए तो वे पर्यावरणीय चेतना से संपन्न होंगे तथा बड़े होकर भी पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुक बने रहेंगे। क्योंकि बचपन से बनने वाली आदत जीवनभर बनी रहती है। बच्चों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने में बाल साहित्य व बाल पत्रिका एक सशक्त माध्यम बन सकती है। क्योंकि बाल साहित्य के अधिकतर विषय पर्यावरण से ही जुड़े होते हैं जैसे– जीव–जंतु, जंगल, वनस्पति, ऋतुएँ, फल–फूल, पेड़, पर्वत, नदी, तालाब आदि प्राकृतिक वातावरण जो कि पर्यावरण के घटक होते हैं। अतः बच्चों को पर्यावरण संरक्षण बाल साहित्य उपलब्ध करवाया जाना चाहिए।

आज समाज के विस्तार के साथ–साथ बहुत सी चुनौतियाँ भी सामने आईं हैं जिनके प्रति सचेत होना बहुत आवश्यक है। आज बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री के माध्यम से हमें पता चलता है कि पर्यावरण संरक्षण की कितनी आवश्यकता है और इस संदर्भ में यह कहानी, कविता, लेख अपने महत्व के साथ जाने अनजाने कितने हृदय को छू लेती है। प्रत्येक व्यक्ति के मन को जाग्रत करने का काम भी करती है। पर्यावरण में वन्य जीवों का संहार तथा निरंतर नष्ट होने वाले जंगलों से प्रकृति और पर्यावरण में बहुत से हानिकारक बदलाव सामने आए हैं। पर्यावरण ही है जो मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन, व्यवहार, स्वभाव, विकास और परिपक्वता सभी को प्रभावित करता है। अतः पर्यावरण असंतुलन का दुष्प्रभाव बालमन पर भी पड़ता है।

इस समय पर्यावरणीय चेतना का जाग्रत होना बहुत जरुरी है। इस चेतना को जगाने में बाल पत्रिका अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। पर्यावरणीय चेतना के प्रति जागरुकता आज के युग की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। आज पर्यावरण संरक्षण व प्रदूषण नियंत्रण पर बाल साहित्य के माध्यम से अभियान चलाने की आवश्यकता है। वर्तमान में बालवाटिका, बाल भारती, बालहंस, समझ झरोखा, बालवाणी, उजाला, बच्चों का देश, नंदन, चंपक, देवपुत्र जैसी अनेक बाल पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं जिनमें पर्यावरण चेतना विषय पर अनेक कविता, कहानियाँ प्रकाशित की जा रही हैं।

पर्यावरणीय चेतना के स्वरों को प्रस्तुत करते हुए बालवाटिका में बाल साहित्यकार विनोदचंद पाण्डेय 'विनोद' जी ने अपना लेख प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने कविता की पंक्तियों द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरुकता उत्पन्न करने का कार्य कर रहे है।

मंगलमय वरदान मिला है हमें प्रकृति के द्वारा।
दिखलाई देता सुषमामय जिससे यह जग सारा।
भू, नभ, पर्वत, पवन सिंधु, वन पर्यावरण बनाते।
हरे पेड़, रंगीन फूल भी वातावरण सजाते।
नदी, सरोवर, झील, ताल की लगती छटा निराली।

[1]. डॉ. परशुराम शुक्ल – तिरंगा – जनवासी प्रकाशन दिल्ली – पृ. 48

[2]. https://m-hindi.indiawaterportal.org पर्यावरण चेतना : एक प्रयास जागरुकता का

लहराता रहता है प्रतिपल सागर गौरवशाली।

पर्यावरण संरक्षण का समस्त प्राणियों के जीवन से घनिष्ट संबंध है। प्रदूषण के कारण सारी पृथ्वी दूषित हो रही है जिससे भविष्य में मानव सभ्यता का अंत निकट ही दिखाई दे रहा है जिससे स्थिति को विश्व स्तर पर ध्यान में रखकर सन् 2002 में जोहान्सबर्ग में पृथ्वी सम्मेलन आयोजित किया गया तथा इसमें विश्व के सभी देशों ने पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देने के लिए अनेक उपाय सुझाए। अतः पर्यावरण संरक्षण से ही धरती पर जीवन कस संरक्षण हो सकता है।

इस समस्या को ध्यान में रखते हुए हमारे सभी बाल साहित्यकार समय–समय पर अपने लेख, कहानियाँ, कविताएँ प्रस्तुत करते आ रहे हैं जो कि पर्यावरणीय चेतना जाग्रत करने में सहायक सिद्ध हो रही है। सामाजिक सरोकारों को समर्पित बहुत से बाल साहित्यकार जैसे– परशुराम शुक्ल, डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय8, डॉ. राकेश चक्र, डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, डॉ. शकुन्तला कालरा, डॉ. मालती शर्मा आदि ने अपनी रचनाएँ बाल पत्रिकाओं में प्रस्तुत की हैं जो कि पर्यावरण चेतना जैसी समस्याओं को लेकर सजगता प्रस्तुत करती है।

डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' ने पर्यावरण संरक्षण व वृक्षारोपण के महत्व को बताते हुए बहुत सी बाल कविता की रचना की हैं जिसमें 'आओ पेड़ लगाएँ' शीर्षक से उनकी कविता के कुछ अंश इस तरह है।

सारे जग के शुभ चिंतक ये पेड़ बहुत उपकारी।
सदा–सदा से वसुधा इनकी ऋणी और आभारी।
परहित जीने मरने का आदर्श हमें सिखलाएँ।
फल देते और देते है सरस हवा सुखकारी।
ऑक्सीजन का मधुर खजाना भर–भर हमें लुटाएँ।
आओ पेड़ लगाएँ।

आज जंगलों के कटने के कारण वन्य जीवों की सुरक्षा खतरे में पड़ गई है जिससे वायु चक्र, जलवायु और वर्षा भी प्रभावि हुई है। ऑक्सीजन की कमी और बढ़ती कार्बन डाईआक्साइड के कारण 'ग्रीन हाउस प्रभाव' पर प्रभाव, भूमिक्षरण, बाढ़, सूखे की परिस्थितियाँ सामने आ रही है। इस समस्या को लेकर बाल पत्रिका देवपुत्र (मार्च 2019) में छपी संतोष श्रीवास्तव 'राम' की एक कहानी 'पेड़ों की भरपाई' में लेखक बता रहे हैं कि आवश्यकता होने पर अगर हम एक पेड़ काटते भी है तो उसकी भरपाई के लिए हमें दस पेड़ लगाने चाहिए।

जल, वायु, ध्वनि, भूमि, रेडियोधर्मी प्रदूषणों के कारण हमारा जीवन बहुत प्रभावित हो रहा है। इन प्रदूषणों के कारण हमारे व हमारे फूल जैसे बच्चों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। अनेकों बीमारियाँ, अस्थमा, कैंसर, चर्मरोग, बुखार, सिरदर्द आदि हो रही है। ऋतु चक्र परिवर्तन, कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा बढ़ने से हिमखण्ड पिघल रहे हैं। जिसके फलस्वरूप सुनामी, बाढ़, सूखा, अतिवृष्टि या अनावृष्टि जैसे दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। अतः हमें हमारे प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा के लिए और उसे सामान्य रूप से सुरक्षित रखने के लिए शपथ लेनी चाहिए।

पर्यावरण पर केन्द्रित बालवाटिका व देवपुत्र जैसी पत्रिकाओं ने अनेकों विशेषांकों का योगदान दिया है जिसमें से श्री रमेशचंद्र पंत जी ने कुछ काव्य पंक्तियाँ लिखी है।

इस धरती पर सोचो किंचित पेड़ नहीं यदि होते।
खुशबू होती नहीं हवा में नहीं तितलियाँ फूल।
नहीं ऑक्सीजन होती भूतल पर प्राणतत्व का मूल।

इसी के साथ अनेक रचनाएँ पर्यावरणीय चेतना को जाग्रत करने के लिए प्रस्तुत है। जिसमें पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण नियंत्रण, वृक्षारोपण को ध्यान में रखकर की गई रचनाएँ शामिल है।

डॉ. गणेशदत्त सारस्वत ने 'वायु प्रदूषण अगर रोकना हो तो तुम वृक्ष लगाओ', हरिशंकर पाण्डेय ने 'पर्यावरण संतुलन में पेड़ों का बड़ा सहारा है', विनोदचंद्र पाण्डेय 'विनोद' ने 'वृक्ष की महिला अपरम्पार', डॉ. श्रीप्रसाद ने 'पेट काटने से धरती की सुंदरता मर जाती है', 'पेड़ों की हरियाली पाकर धरती खुशी मनाती है', श्री जगदीशचनद्र शर्मा ने 'कटे न वन वृक्षारोपण हो, वन–जन्तु हुसलाएँ' लिखकर पर्यावरण को महत्वपूर्ण बताया है। इनके अलावा अन्य रचनाकारों ने अपनी कविताओं में वृक्ष की महिला का गुणगान किया है। जिसमें डॉ. अजय जनमेयजय, डॉ. शकुन्तला कालरा, राजा चौरसिया, डॉ. राष्ट्रबंधु, डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, डॉ. सरोजनी कुलश्रेष्ठ, राकेश चक्र आदि नाम विशेष रूप से अपनी रचनाओं में पर्यावरणीय चेतना को स्थान देते हैं।

नई पीढ़ी को आधुनिक जीवन में आने वाली भयानक प्रवृत्तियों के प्रति सचेत व जागरुक करना जरुरी है। इसके लिए न सिर्फ अपनी सोच बदलनी होगी बल्कि बच्चों की सोच में परिवर्तन लाकर उन्हें आने वाली समस्या का सामना करने के लिए तैयार करना होगा। कविवर कल्पना नाथ सिंह ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए सबेरा लाने की अपेक्षा की है जिससे पर्यावरण सुरक्षित व संरक्षित रह सके।

बच्चों! तुमको इस धरती को फिर से स्वर्ग बनाना होगा।
सूरज बनकर तुम्हें धरा पर नया सबेरा लाना होगा।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए बालवाटिका पत्रिका (जून 2019) में प्रकाशित 'राज सक्सेना' अपनी कविता 'चलो उठो हम धरा बचाएँ' के माध्यम से बच्चों को भविष्य में आने वाली परिस्थितियों के प्रति सचेत करते हुए लिखते है–

उचित भूमि थोड़ी, यदि पाएँ, नहीं तनिक भी, देर लगाएँ।
कई पेड़, उस जगह लगाकर, धरती पर, हरियाली लाएँ।
पर्यावरण, गतिमान बनाएँ, चलो उठो, हम धरा बचाएँ।

अंदर अंदर खौल रही है धधकी धरती डोल रही है।
अग्निशिखा सी मत बनने दो, शीघ्र करो कुछ बोल रही है।
तापमान, बढ़ने से पहले, वृक्ष लगाकर छाया लाएँ।
धरती पर, एक स्वर्ग बनाएँ, चलो उठो, हम धरा बचाएँ।

सूखी नदियाँ कहे मचलकर, देखो अब तो चलो संभलकर।
अगर नहीं चेते तुम मानव, मर जाओगे, प्यासे रहकर।
अभी समय है, चलो उठे सब, जल संचय कर वृक्ष लगाएँ।
जल स्तर, ऊपर ले आएँ, चलो उठो, हम धरा बचाएँ।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

हरित हिमालय पिघल रहा है, कंपन हो, मचल रहा है।
पिघल रहे, हिमनद तेजी से, जमा ग्लेशियर, उबल रहा है।
नहीं और कुछ, कर सकते तो, वृक्ष लगाकर, वर्षा लाएँ।
ताल, तलैया, झील बचाएँ, चलो उठो, हम धरा बचाएँ।

वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि पर्यावरण के साथ अनुकूलित व मैत्रीपूर्ण व्यवहार किया जाए जिससे पर्यावरण संरक्षण हो सके। क्योंकि पूर्व की पीढ़ी अपने समय में प्रकृति का पूर्ण विकास करके उसे एक सम्पत्ति के रूप में आने वाली पीढ़ी को स्वच्छ व स्वस्थ्य वातावरण या पर्यावरण प्रदान कर सके। तथा साथ ही साथ इस बात को भी हमेशा याद रखे कि–

''मनुष्य प्रकृति से है, प्रकृति मनुष्य से नहीं।''

पर्यावरण के प्रति चिंता करते हुए बालवाटिका जून 2008 के अंक की संपादकीय के अंतर्गत बालवाटिका के कुशल साहित्यकार व सफल संपादक डॉ. भेरुलाल गर्ग का विचार ध्यान देने योग्य है– ''आओ हम जन–जन में पर्यावरण संरक्षण चेतना जगाये और प्रदूषण के प्रचंड तांडव से अपने आपको बचाये।'' इस प्रकार पर्यावरण दिवस मनाना तभी सफल व सार्थक होगा जब जन–जन में पर्यावरण के प्रति जागरुकता उत्पन्न हो सकेगी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिन्दी की बाल पत्रिकाओं ने पर्यावरणीय चेतना के प्रति जागरुकता की भावना बच्चों के बालमन पर अंकित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। वर्तमान में इस विषय की अनेक विधाओं पर महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है परन्तु अभी भी पर्यावरणीय चेतना के संदर्भ में ऐसे विषय हैं जो अछूते रह गए हैं। अतः बाल साहित्यकारों का इस हेतु अभी भी और जागरुकता की आवश्यकता है। पर्यावरण चेतना आज की युगानुकूल आवश्यकता है। इस क्षेत्र में अपने योगदान प्रदान करने के लिए बहुत बड़ा मैदान खाली है। पर्यावरण चेतना को लेकर सृजन की अपार संभावनाएँ हैं। सजग बाल साहित्यकार इस दिशा में कार्यरत होंगे ऐसी आशा की जा सकती है।

संदर्भ सूची–

1. किरौला उदय (संपादक)/ज्ञान विज्ञान बुलेटिन (बाल साहित्य विशेषांक) जून 2015 पृ. 10
2. गर्ग भैरूलाल (संपादक)/बालवाटिका (मासिक पत्रिका) अक्टूबर 2016 पृ. 45–46
3. गर्ग भैरूलाल (संपादक)/बालवाटिका (पर्यावरण विशेषांक – संपादकीय) जून 2013 पृ. 2
4. गर्ग भैरूलाल (संपादक)/बालवाटिका (पर्यावरण विशेषांक) जून 2013 पृ. 15, 20, 30
5. गर्ग भैरूलाल (संपादक)/बालवाटिका (बाल साहित्य और पर्यावरण चेतना संपादकीय) जून 2017 पृ. 2
6. गुप्ता नीरज/संस्कारम् (मासिक पत्रिका) नवम्बर 2019 पृ. 27
7. गर्ग भैरूलाल (संपादक)/बालवाटिका (मासिक पत्रिका) जून 2019 पृ. 50
8. बाल साहित्य का शंखनाद पृ. 31
9. शुक्ल परशुराम/तिरंगा – जनवासी प्रकाशन दिल्ली पृ. 48

RRIJM 2015, All Rights Reserved